International Journal of Jyotish Research: 2025; 10(2): 09-10

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2025; 10(2): 09-10
© 2024 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 01-05-2025
Accepted: 04-06-2025

भानुदवे प्रसाद सिंह
गवेषक, विश्वविद्यालय सस्कृत विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

Correspondence
भानुदवे प्रसाद सिंह
गवेषक, विश्वविद्यालय सस्कृत विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

महाकवि माघ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

भानुदवे प्रसाद सिंह

1. प्रस्तावना
सस्कृत साहित्य की गरिमामयी परंपरा में अनेक महान कवियों ने अपनी अनुपम रचनाओं से अमिट छाप छोड़ी है। कालिदास, भास, भवमूति बाणभट्ट, दंडी आदि के साथ ही एक नाम और अत्यंत गौरव से लिया जाता है – महाकवि माघ का। माघ का उल्लेख संस्कृत साहित्य के शिखर कवियों में किया जाता है। इनकी रचना 'शिशुपालवधम्' को काव्यत्रयी के अन्तर्गत तीसरे स्थान पर रखा गया है। शिशुपालवधम् काव्य भारतीय काव्यशास्त्र और साहित्य का अद्भुत उदाहरण है, जो उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक है।

2. जीवन परिचय
माघ का जीवनकाल लगभग 7वीं शताब्दी माना जाता है। उन्होंने अपना निवास स्थान गुजरात के श्रीमाल (वर्तमान राजस्थान के मीनमाल) को बताया है। वे भारवि से प्रेरित थे और कालिदास के काव्य सौंदर्य से भी प्रभावित थे। माघ का परिवार विद्वानों का था। उनके पिता का नाम दत्तक था जो ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाता थे। माघ स्वयं भी खगोलविद्, व्याकरणाचार्य और अलंकारशास्त्र के प्रकांड विद्वान् थे।[1]

3. शिशुपालवधम्
एक अनुपम महाकाव्य माघ का एकमात्र उपलब्ध महाकाव्य 'शिशुपालवधम्' है। यह महाकाव्य महाभारत के सभापर्व पर आधारित है और इसमें कृष्ण द्वारा शिशुपाल के वध की कथा को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया जाता है। इसमें कुल 20 सर्ग और लगभग 1800 श्लोक हैं।
यह काव्य 'कीर्तिकाव्य' और 'वधकाव्य' के बीच सतुंलन प्रस्तुत करता है। यहाँ कृष्ण की महिमा और शौर्य के साथ–साथ शिशुपाल के विरोध का भी यथार्थ चित्रण किया गया है। महाकवि माघ ने अपने उस काव्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, यमक आदि अलंकारों का अत्यंत कुशल प्रयोग किया है।

4. काव्य शैली और भाषिक विषेशताएँ
माघ की भाषा संस्कृत की अत्यंत परिष्कृत, संस्कारित और क्लिष्ट शैली का प्रतिनिधित्व करती है। उनकी भाषा में तत्सम शब्दों की प्रधानता है। वे शब्दों के चयन में सूक्ष्म और सटीक हैं। उन्हें अलंकारों का चमत्कारी प्रयोग करना आता है। उनके काव्य में निम्न भाषिक विशेषताएँ देखी जाती हैं।

- **प्रांजलता:** शुद्धता एवं प्रवाह उनके काव्य में स्पष्ट दिखाई देता है।
- **अंकारयुक्त शैली:** विशेषकर अनुप्रास, यमक और श्लेष का अत्यधिक प्रयोग हैं।
- **संवेदनशील वर्णन:** प्रकृति, युद्ध, वीरता, और नारी सौंदर्य का चित्रण अत्यन्त हृदयस्पर्शी हैं।
- **छन्दों की विविधता:** वसंततिलका, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित आदि छन्दों का प्रयोग उनके काव्य में मिलता है।

5. अलंकारिक प्रयोग
माघ के काव्य में अलंकारों की भारमार है। वे भाषा के माध्यम से अर्थ की गहराई और सौंदर्य को निखारते हैं। उदाहरण के लिए यमक अलंकार –

'नवपलाशपलाशवनं पुरः
स्फुटपरागपरागतपंकजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत्
स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः।।'[2]

यह द्वयपद यमक का उदाहरण है। यह उनकी भाषिक कुशलता का प्रमाण है।

अनुप्रास अलंकारः ध्वनियों की पुनरावृत्ति से वे विशेष भावात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

दाददो दुद्दुद्दादी
दादादो दूददीददोः।
दुद्दादं दददे दुद्दे
ददाददददो ददः।।[3]
प्रस्तुत पद्य में केवल दकार का प्रयोग हुआ है।

श्लेष अलंकारः एक ही शब्द से विभिन्न अर्थ निकालने की कला माघ के काव्य में स्पष्ट दिखती है।

तत्रावापविदा योगै–
र्मण्डलान्यधितिष्ठता।
सुनिग्रहा नरेन्द्रेण
फणीन्द्रा इव शत्रवः।।[4]
प्रस्तुत पद्य में प्रकृताप्रकृतविषय श्लेष है।

5. माघ की तुलना कालीदास और भारवि से

माघ को कालिदास की सौंदर्य भावना और भारवि के गंभीर चिंतन का समन्वयकर्ता माना गया है। एक प्रसिद्ध उक्ति है –
तै सज्जनैः काव्येषु यस्य यस्य कालिदासोऽस्ति, भारविर्वा माघः
जिसके पास कालिदास की कल्पना, भारवि की गंभीरता और माघ की शब्द–कुशलता हो, वह कवियो में श्रेष्ठ होता है।

एक अन्य उक्ति –
उपमाकालिदास्य,
भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलादित्यम् माघे
सन्ति त्रयो गुणाः।।

यह स्पष्ट करता है कि माघ में कालिदास की उपमा शक्ति, भारवि का अर्थ–गौरव और दण्डी की पदलालित्य की त्रिवेणी का प्रवाह है।

6. ज्ञान के विविध आयाम

महाकवि माघ केवल कवि ही नहीं, बल्कि एक खगोलशास्त्री, व्याकरणाचार्य, दर्शनशास्त्री और गणितज्ञ भी थे। उनके काव्य में खगोलीय घटनाओं, ऋतुओं के परिवर्तन और प्रकृति के चक्रों का यथार्थ चित्रण है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे इन विषयों के ज्ञाता थे। उनके श्लोकों में तर्क, विज्ञान और गणित के संकेत भी देखे जा सकते हैं।

7. साहित्य के स्थान और प्रभाव

माघ की ख्याति केवल संस्कृत साहित्य में ही नहीं, बल्कि अन्य भाषाओं के साहित्यकारों पर भी रही है। उनकी शैली कथावस्तु की प्रस्तुति, छंद संयोजन एवं अलंकारप्रयोग ने आगे के कवियों को गहराई से प्रभावित किया है। उनके श्लोक आज भी संस्कृत प्रेमियों और छात्रों के लिए आदर्श माने जाते हैं। उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने गंभीर विषय को भी सौन्दर्य के साथ प्रस्तुत किया है। शिशुपालवध जैसे गंभीर, युद्ध प्रधान विषय को भी वे कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में सफल रहे।

8. निष्कर्ष

माघ की बहुमुखी प्रतिभा का प्रभाव इनके एकमात्र उपलब्ध ग्रंथ "शिशुपालवधम्" में पूरी तरह प्रकट होता है। वे शब्दों के जादूगर हैं, जिनकी रचना में व्याकरण, छंद, अलंकार, सौंदर्य, भाव, तर्क और ज्ञान का अद्भुत समन्वय है। वे संस्कृत साहित्य के ऐसे स्तम्भ हैं, जिनके बिना काव्यशास्त्र की इमारत अधूरी मानी जायेगी। उनकी बहुमुखी प्रतिमा को निम्न बिन्दुओं में समेटा जा सकता है –
काव्य रचना में शब्द और अर्थ का अद्वितीय सामंजस्य।
1. अलंकारों के माध्यम से सौंदर्य की उच्चतम अभिव्यक्ति।
2. दर्शन, खगोल, तर्क और व्याकरण में प्रवीण।
3. परम्परा एवं नवाचार का संतुलन।
4. अत्यंत गूढ एवं क्लिष्ट विषयों को भी रसपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता।

9. उपसंहार

महाकवि माघ न केवल सस्कृत साहित्य के गौरव हैं, बल्कि भारतीय ज्ञान परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र भी हैं। उनकी रचनाएँ हमें यह सिखाती हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि ज्ञान सौदर्य और संस्कारों का माध्यम भी हो सकता है।
शिशुपालवधम् केवल एक काव्य नहीं बल्कि संस्कृत भाषा के उच्चतम संभावनाओं का जीवंत उदाहरण है। माघ की बहुमुखी प्रतिभा हमें यह प्रेरणा देती है कि हम अपने साथ कला और सृजनशीलता को संतुलित रूप से विकसित करें।

10. सन्दर्भ

1. माघकवि, पृष्ठ 7
2. शिशुपालवधम् 6.2
3. शिशुपालवधम् 19.114
4. शिशुपालवधम् 2.88